

भारतीय मृदा

भारत - मृदा

- मृदा पृथ्वी के भूपटल का सबसे ऊपरी भाग है जो कार्बनिक एवं अकार्बनिक पदार्थों के संयोजन से निर्मित होता है।
- भारत में विभिन्न प्रकार की जलवायु पायी जाती है जिसके कारण कई प्रकार के मृदा का विकास हुआ है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने मिट्टी को 8 भागों में वर्गीकृत किया है।

1. जलोढ़ मिट्टी
2. काली मिट्टी
3. लोस "
4. लैटराइट "
5. कनीय एवं पर्वतीय "
6. भूतलस्थलीय "
7. क्षारीय "
8. पिट "

1. जलोढ़ मिट्टी

निर्माण - इस मिट्टी का निर्माण नदियों के द्वारा लायी गई मलदा के निक्षेपण से

विस्तार - भारत में इसका कुल विस्तार 7.68 लाख वर्ग कि.मी. है जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 24% भाग है।

- उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्र, - पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड, UP, बिहार, WB

- भारत के लोच एवं नदी घाटी प्रदेश

विशेषता - 1. यह मिट्टी अभी भी निर्माण के अवस्था में है।

2. उपविभाग - भाबर, तराई, बांगर, खापर

3. नाइट्रोजन की कमी -

4. पौष्टिक एवं पानी पर्याप्त

5. ह्यूमस पर्याप्त

6. रंग सामान्य गेर पर हल्का पीला

7. उर्वर मिट्टी

8. पुरानी जलोढ़ मिट्टी - बांगर, नई जलोढ़ मिट्टी - खापर क्षेत्र है।

मृदा

1. तराई प्रदेश क्षेत्र वगैरे से आच्छादित या लैटराइट जमातियों एवं शिखरों के द्वारा बड़े पैमाने पर पत्थरों की कटाई कर कृषि कार्य किया जा रहा है।

2. भारत का प्रसिद्ध जन्ना पौद्य मृजप्रकाशपुर से मृजप्रकाशपुर तक इसी पौद्य में अवस्थित है।

3. बांगर मिट्टी भारत का अन्न भंडार है। पंजाब, हरियाणा, पं. U.P. में अन्न की कृषि इसी मिट्टी पर किया जाता है।

4- खाकर मिट्टी खावल, अंड छवि के लिए प्रसिद्ध + मैंग्रो वनस्पति

5- भारत प्रदेस में मिली वाली पत्थर है गौड़ लडक + गणन निर्माण का कार्य

2. काली मिट्टी

निर्माण - ज्वालामुखी चट्टानों के स्फुटन से निर्मित

विस्तार - दक्कन लावा पठार, मालवा का पठार, तेलंगाना का पठार, राजमहल पहाड़ क्षेत्र, कर्नाटक का पठार, हैयम्बुदुर का पठार
- भारत में 5-18 लाख वर्ग km पर

विशेषता - 1. टिटानियम एवं थोरियम के आक्साइड के कारण रंग भाला

2. रासायनिकीयम की मात्रा परीण

3. जल धारण क्षमता खराब

4. अम्लीय की मात्रा कम

5. स्वयं सुतार्क के लिए प्रसिद्ध

6. इसे रेगुर मिट्टी भी कहते हैं।

महत्व - 1. भारत में कपास की खेती - कपासी मिट्टी

2. जल धारण क्षमता अधिक - गन्ना की खेती बड़े पैमाने पर

3. खनिजों वाले क्षेत्रों में मूँसफली, मैका

4. छाज, गोबर, गिरगी कैला, त्रिलोक, दलहन

3. लाल मिट्टी

निर्माण - लैटराइट चट्टानों के स्फुटन से निर्मित - ग्रेनाइट व नीस चट्टानों के स्फुटन से

विस्तार - बैतानागपुर का पठार, पट्टा बंगाल के पठारों हैं, तमिलनाडु, कर्नाटक, दो आंध्रप्रदेश, म.प्र., उत्तर के मिर्जापुर से असम तक
- 5-18 लाख वर्ग कि.मी

विशेषता - 1. फेरस आक्साइड के कारण रंग लाल

2. जोयरा की क्षमता

3. नाइट्रोजन पर्याप्त

4. ग्रेनाइट, नीस व ब्रिस्टल चट्टानों के स्फुटन से बना

5. दो भारत के दो प्रदेशों में मिली वाली मिट्टी

6. अम्लीय मिट्टी

महत्व - 1. मोट धनाज के लिए प्रसिद्ध

2. कर्नाटक के चिक्मंगलूर जिलामें इसे मिट्टी पर रबर एवं कैला

लैटेराइट मिट्टी

निर्माण - लैटेराइटिकरण से निर्मित

विस्तार - पंजाब के पठार, कर्नाटक के मैदानी भाग, मैदानी भाग का पठार
पात्र का पठार, 3. मैसूर

- क्षेत्रफल 1.26 लाख वर्ग km.

विशेषता - 1. फेरस ऑक्साइड के कारण रंग लाल

2. अपघालन की डिग्री सर्वाधिक

3. अधिक ऋतु में सूखकर छोर जमाने आर्द्र ऋतु में गीली हो
चिपचिपी हो जाती है।

4. अनुर्वर मिट्टी

5. नाइट्रोजन पर्याप्त परंतु द्रव्यमान की कमी

6. वैकल्पिक रूप से अधिक व आर्द्र जलवायु में बनने वाली मिट्टी

महत्व - 1. मीठे अनाज, कृषि की खेती

2. चाय की खेती

3. गरीब लोग इस मिट्टी से घर बनाते हैं।

4.

पर्वतीय एवं वनीय मिट्टी < 01 मिमी
< 09 मिमी

निर्माण - इस मिट्टी का निर्माण पर्वतीय ढालों पर और वनीय क्षति में चट्टानों
के ऋतुहरण से होता है।

इसको तुलना पॉडजोलीकरण से की जा सकती है।

विस्तार - हिमालय, पंजाब, उत्तरप्रदेश, विन्ध्यमाल के ढालों पर, पूर्वी घाट, आसामी

- 2.85 लाख वर्ग कि.मी०

विशेषता - 1. मिट्टी की परत पतली

2. जीविक पदार्थों की मात्रा अधिक

3. उर्वरता कम

4. अपरदन की समस्या से ग्रसित

- 5. पौधों, कॉम्पोसल व पुनर्जीवनी मिट्टी

महत्व - 1. अनाज, नीलागरी व हिमालय प्रदेश में - चाय

2. पंजाब के सहारे कटेवा व मसाला

3. कश्मीर व हिमालय प्रदेश - 149

4. जनजाति लोग भूमि कृषि

6. भरतखलीय मिट्टी

निर्माण - इस मिट्टी का निर्माण अध्रुवलेकन (लघाम अपरपत्र) के माध्यम से चट्टानों के टूटने से होता है।

वितरण - भारत भरतखलीय - पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखण्ड
- 1.42 लाख वर्ग कि०मी०

विशेषता - 1. एक प्रकार का बुलुई मिट्टी है। - वायु की मात्रा अधिक
2. खोटा & फॉस्फोरस पर्याप्त
3. नाइट्रोजन & स्यूमस की कमी
4. नमी की कमी

मूल्य - 1. जाड़ाफनी, खजूर, केकड़
2. जल उपलब्धता वाले क्षेत्रों में मूँडधान की खेती
3. प्राथमिक वर्षा पर आधारित मूँड खेती
4. राजस्थान के अजमेर जिला, इंदिरा गांधी नहर के कारण चावल एवं गन्ना की खेती

7. क्षारीय मिट्टी / नमकीन / लवणीय / रेह / चौपन / कल्लर मिट्टी

निर्माण - इस मिट्टी का निर्माण लवणीकरण विधि से होता है
- इस विधि में निचले स्तर के लवण कैल्शियम क्रिया द्वारा अपी स्तर पर आ जाते हैं। नमी से वाष्पीकरण हो जाने पर क्षारीय पर नमक का परत बचता है जिससे लवणीय मिट्टी का निर्माण होता है।

वितरण - पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, उत्तराखण्ड, हरियाणा, उत्तराखण्ड
• 3.5 लाख वर्ग कि०मी० में नहर सिंचाई वाले क्षेत्रों में
• भारत के राष्ट्रीय क्षेत्र
• 1 लाख वर्ग कि०मी०

विशेषता

1. मिट्टी में नमक की मात्रा अधिक
2. इसमें कैल्शियम, मैग्नीशियम और सोडियम के लवण पाये जाते हैं।
3. प्रकृति क्षारीय
4. अणु पदार्थों में विकसित होने वाली मिट्टी
5. अधर मिट्टी

मूल्य

1. राष्ट्रीय क्षेत्रों में - मूँड, नारियल
2. नहर सिंचाई वाले क्षेत्रों में जिनमें को प्रयोग एवं अधिक जल निवासी को उपयुक्त कर स्वाधान की कृषि

8. जैविक पीट मिट्टी

निर्माण - इसका निर्माण दलदली या जलजमाव वाले क्षेत्रों में जैविक पदार्थों एवं चराओं के सड़ने-जलने से

विकास - केरल का अल्पी जिला, उत्तराखण्ड के झुलमाड़ा, पं. संग्राम के सुंदरवन का डेल्टा, तमिलनाडु में कर्ली-करी, अन्य डेल्टाई क्षेत्र।
- क्षेत्रफल - 1 लाख वर्ग कि.मी.

विशेषता: 1. जैविक पदार्थ एवं भाद्रता की प्रचुरता

2. अनुर्वर मिट्टी

3. खली, भारी व अधिक जमलीय

4. कॉस्फोरस व पोटाश की कमी

मरम्ब - 1. चावल

2. जल विकास की पूर्ण व्यवस्था कर सब्जी, गन्ना, गारियल, तम्बाकू

